बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - २ - पूर्व कसौटी - १४ जून, २०१५)

☞ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ☜

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।

२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English)में परीक्षा देनी होंगी । **इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नही होगी ।**

३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । **अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और एसी उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।**

४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । **वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से **लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । **एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

७. **परीक्षा खंड के बाहर** अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

८. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्युट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।**

९. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदावाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नप्रत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । **किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

११. **मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

१२. **परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान** किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

१३. **प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।**

- परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । **पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता हैं ।** प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
- जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, **तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।** जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
- प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद **दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा ।** एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । **ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।**
- प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, **उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रुप में दिए जाएगें** और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
- **नोंध :** जिस परीक्षार्थी ने **भारत की प्रवीण परीक्षा** उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।

१४. **अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!**

४०२/५५०

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १४ जून, २०१५)

(समय : दोपहर २:०० से ४:१५) **सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र -२**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : किशोर सत्संग प्रवेश - प्रथम संस्करण, जून - १९९७

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''खा, यह तेरा खाद्य ही तो है ।'' (३०) २. ''तुमने रास्ते में पड़ा तोड़ा कहीं देखा ?'' (१४)

३. ''तुम मुझ से विवाह करो ।'' (४३)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. झमकूबा ऊँट के कंकाल में जाकर छिप गई । (५६)

२. जालमसिंह बापु तुरन्त घोड़ी पर सवार होकर देवलिया गाँव की ओर चल पड़े । (६७)

३. संबंधी काशीदास को सत्संग छोड़ देने के लिये समझाने लगे । (३२-३३)

प्र.३ 'रत्नाकर ओर चार भाई' (२३-२४) - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. शीतलदास ने किस की प्रशंसा सुनी थी ? (१६)

२. ठाकोरजी के आगे रखे गए रथ में क्या लगे रहते हैं ? (४९)

३. श्रीजीमहाराज की आज्ञा का यथोचित पालन करने से क्या प्राप्त होता है ? (१-२)

४. श्रीजीमहाराज का वियोग होते ही सच्चिदानंद स्वामी को क्या होता था ? (६३)

५. किस ने जगन्नाथपुरी से द्वारिका तक दण्डवत् प्रणाम करते करते यात्रा की थी ? (५७)

प्र.५ वचनामृत गढ़डा प्रथम प्रकरण ६ (६०-६१) - **निरूपण कीजिए ।** [५]

प्र.६ निम्नलिखित कीर्तन / अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए । [८]

१. मान तजी सन्तन के ..... मन दीजे । (१८-१९)

२. सो पत्री में ..... नहीं बड़ भाँग्य । (२२)

३. अनन्तकोटीन्दु ..... नमामि ॥ (२०)

४. धर्मेण रहिता ..... श्रीकृष्णसेवनम् ॥ (६६)- श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

विभाग-२ : शास्त्रीजी महाराज - द्वितीय संस्करण, जून - २०१४

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''मन्दिर और ठाकुरजी हमारे हैं ।'' (६५)

२. ''स्वामीश्री कहाँ गए हैं ? वे तो हमारे बीच प्रकट ही हैं ।'' (११२)

३. ''साधु की सुवर्णतुला नहीं होनी चाहिए ।'' (१०३)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. विहारीलालजी महाराज डुंगर भक्त पर बहुत प्रसन्न हुए । (१६)

२. गुणातीतानंद स्वामी ने डुंगर भक्त को वर्तमानबद्ध नहीं किया । (४)

३. स्वामीश्री के प्रति विरोधवृत्ति रखनेवाले साधुओं को आचार्य परोक्षरूप में सहयोग देने लगे । (५७)

प्र.९ निम्नलिखित किन्हीं <u>एक</u> प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) [५]

१. उपासना प्रवर्तन के लिए प्रेरणा । (४५-४७) २. भगतजी : परम एकान्तिक सत्पुरुष । (३०-३१)

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. स्वामीश्री ने किस के लिए सिर मुँडवाया है ? (८१)

२. गोरधनभाई ने कौन सी शरत पर समाधान करने की सलाह दी ? (८७)

३. अदाश्री की बात सुनकर स्वामीश्री ने हाथ जोडकर क्या कहा ? (६२)

४. स्वामीश्री किस को संस्कृत की शिक्षा देते थे ? (९९)

५. स्वामीश्री कहाँ अखण्ड आनन्द करते थे ? (१०२)

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर **''सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - २''** परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ साल ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहि होंगी ।)

प्र.११ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[६]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. कभी-कभी वे बोल पड़ते 'अस्मिन् सम्प्रदाये एकमेव' । (३५)

(१) ☐ महिधर शास्त्री (२) ☐ रंगाचार्यजी (३) ☐ गोरधनदास कोठारी (४) ☐ शंकराचार्य माधवतीर्थ

२. शास्त्रीजी महाराज को बोचासण मंदिर के दरवाजे के लिये जमीन प्राप्त हुई । (७३)

(१) ☐ विरोधी ग्रामजनों ने बेचर कीसा नाम के उछंड आदमी को भेजा ।

(२) ☐ शास्त्रीजी महाराज की दृष्टि से बेचर कीसा का हृदय परिवर्तन हुआ ।

(३) ☐ मोती मतादार ने जमीन में से खूँटा खींचा ।

(४) ☐ मोती मतादार ने स्वामी के चरणों में गिरकर क्षमा याचना की ।

३. गोंडल महाराजा ने कौन सी शर्त रखी ? (९३)

(१) ☐ दस लाख रूपये खर्च किए जाएँ ।

(२) ☐ प्रतिष्ठा में पूरे गाँव को खाना खिलाना ।

(३) ☐ अक्षरदहेरी यथावत् रहनी चाहिए ।

(४) ☐ तीन वर्ष में मंदिर निर्माण पूर्ण होना चाहिए ।

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[६]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : विद्यारम्भ : एक समय पीज गाँव में एक माणभट्ट आये, वे धातु की थाली बजाकर रामायण की कथा कहते थे । प्रागजी भक्त ने एक बार कथा सुनी और कण्ठस्थ हो गई ।

उत्तर : विद्यारम्भ : एक समय **वसो** गाँव में एक माणभट्ट आये, वे **माणमिट्टी** की **गोल बड़ी गगरी** बजाकर **महाभारत** की कथा कहते थे । **डुंगर** भक्त ने एक बार कथा सुनी और कण्ठस्थ हो गई ।

१. **इन्द्र को आह्वान :** भगवानदास ने संकल्प किया कि गोंडल में मंदिर का निर्माण हो तथा शास्त्रीजी महाराज के दर्शन हों, तभी मैं अन्न ग्रहण करुँगा । (९७)

२. **गुणातीत का गौरव :** सौराष्ट्र में मोटा गोबरवाला गाँव में हरिभक्त अमरशीभाई को गुणातीतानंद स्वामी ने दिव्यरूप में दर्शन दिये । (६९)

३. **प्रागजी भक्त की संगत :** सुनिए साधुराम ! प्राणीमात्र की दो आँखें होती हैं, धर्मपरायण व्यक्ति की तीन आँखें होती है, विद्वानों की सात आँखें होती हैं, किन्तु ज्ञानियों के तो असंख्य नेत्र होते हैं । (२३)

४. **ब्रह्मविद्या की राह :** जागा भक्त तो वचनामृत के रहस्य और श्रीहरि के सिद्धांत के संपूर्ण ज्ञाता हैं, उन्होंने भगतजी की कृपा से ब्राह्मी स्थिति प्राप्त की है । (२५)

५. **संत परम हितकारी :** वडोदरा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड शास्त्रीजी महाराज से मिलने सारंगपुर आ पहुँचे और आधा घण्टा रुके । (८५-८६)

६. **स्वामीश्री की महत्ता :** आणंद के निष्ठावान भक्त झवेरभाई ने स्वामीश्री को पधरावनी के लिए चाचाजी के घेर आमंत्रित किया । (७९)

* * *

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ५ जुलाई, २०१५ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx